

अनमोल दावा

जीवन एक बड़ा सफर है,
आपको हर किसी को जवाब
देने और हर चीज पर प्रतिक्रिया
करने की जरूरत नहीं है।

जीएसटी या
सरकारी पूजा

सरकार ने देश के व्यापारियों पर जीएसटी यह कह कर थोपा था कि इस से व्यापार सुविधाजनक हो जाएगा और एक से बढ़ी दूसरी चेन वाली बिक्री के कारण न होफेरी होगी न इंस्पैक्टर राज होगा। सरकार के दूसरे वादों की तरह यह भी खोखला साबित हो रहा है। जीएसटी एक आफत का पहाड़ बन चुका है और बार-बार के रिटर्नों, लंबे नंबरों की मुसीबतों, उलझी टैक्स दरों, सरकारी नोटिसों, ई-वे बिलों के चक्रों में व्यापारियों को इस सुविधा की बहुत बड़ी कीमत देनी पड़ रही है।

सरकार चाहे खुश हो कि प्रारंभ में 84,000 करोड़ रुपए के कुल टैक्स से यह 1 साल में बढ़ कर 2 लाख करोड़ मासिक के आसपास होने लगा है। इसमें घोटाले होने लगे हैं। बड़े फख्र से अधिकारी कह रहे हैं कि कोलकाता में उन्होंने 5,000 करोड़ रुपए का घोटाला पकड़ा है और जांच व छापे जारी हैं। उन का कहना है कि बिना उत्पादन व बिक्री के बिना जीएसटी पोर्टल से बकायदा ई-वे बिल निकाल कर इनपुट टैक्स क्लेम किया जा रहा है और जमकर सरकार को लूटा जा रहा है।

लूटा सरकार को कम जा रहा है, असल में सरकार लूट रही है जो भारी भरकम टैक्स मैनुअल बनाकर अपने अफसरों को ताबड़ी नोटिस जारी करने का अवसर दे रही है। पर नोटिस का मतलब है व्यापारी की सांस रुकना। यह एक तरह की गंदारी होती है जिस में अपील और दलील से नहीं, मेजे के नीचे से लेन-देन से काम चलता है। जीएसटी का ज्यादा लाभ यह हुआ है कि ये मौके राज्य सरकारों के पहले के सलैंटक्स अफसरों के हाथों से खिसक कर केंद्र के अफसरों के हाथों में पहुंच गए हैं। मंदिर जितना बड़ा होगा, मूर्तियां उन्हीं ज्यादा बड़ी होंगी और उन्हाँने ही चढ़ावा ज्यादा दिया जाएगा। इस सिद्धांत पर टैक्स भक्तों को न केवल अब परिक्रमाओं में ज्यादा चक्र लगाने पड़ रहे हैं, पूरे मंदिर परिसर में शारिरों की भीड़ जमा हो गई है। जो भक्तों को तुरंत दर्शन, तुरंत पूजा करने के नाम पर पैसा वसूलती है। टैक्स सरकारी पूजा जैसा बन गया है।

इस टैक्स पूजापाठी प्रक्रिया में बहारी लोगों को लाभ होने लगा है। हर व्यापारी को अकाउंटेंट बढ़ाने पड़ रहे हैं और साथ ही, एडवाइजरी और कैप्सलेटों की गिनती भी बढ़ रही है। एडवाइजरी कंपनियां मोटे रिटर्नों पर नियुक्त की जाने लगी हैं। रिस्क इंश्योरेंस भी चालू होने की संभावना है जिस में गुजरे सालों के रीअसेसमेंट पर लगे टैक्स के भूगतान की सुविधा हो।

सरकारी टैक्स किसी भी युग में सही नहीं रहा है। अब जब सरकार पूजापाठियों के हाथों में हो तो कोई भी उम्मीद करना बेकार ही है।

सरिता से साभार



अज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज सेव सम्बन्धी सुविधा से हुक्मित मिलेगा। व्यापार और खान-पान पर ध्यान दें। जिससे जीवन-जहां पर एक चर रहे मुक्तयों का ऐलान आपके पास है। जेलिन का करोबर करने ले जाएं।



अज आपका दिन शानदार रहेगा। स्पॉट से जुड़ी मिलाऊओं के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला है, किसी अलादा से समाजन किया जा सकता है। अपनी में ड्रामा लेने से अपने आपको छोड़ बैठने में अल्पसंघर्ष करें, परंतु काम का लाभ लाना चाहिए। आज बच्चों को पढ़ने में सेंदू करें, बच्चे खुश रहें।



अज आपका दिन बेहतर रहेगा। कामकाज से जुड़ी चुनौती आज काम समें आयी होगी। लेकिन आप इसे पार करने में अल्पसंघर्ष करें। अपनी काम के लिए आपको ज्ञान-जागरूकता की जरूरत है।



अज आपका दिन बेहतर रहेगा। कामकाज से जुड़ी चुनौती आज काम समें आयी होगी। लेकिन आप इसे पार करने में अल्पसंघर्ष करें। अपनी काम के लिए आपको ज्ञान-जागरूकता की जरूरत है।

साभार

दैनिक दावा

विश्लेषण

लोकसभा के सत्र नई उम्मीदों को परव लगाये

- ललित गर्ग -



अठारहवीं लोकसभा का पहला सत्र सेव सम्बन्धी दूरुत्तमी ने नरेंद्र मोदी ने लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ ली। तीन जूलाई तक दस दिन के लिये चलने वाले इस सत्र में दो संसदीय बोर्डों को ज्ञान-जागरूकता के रूप में देखा जाएगा। लोकसभा सत्र में विषय इस बार अपनी बड़ी हुई शक्ति का एहसास करते हुए अकामक होने से नहीं करेगा। बृहत्वार का गुरुत्व दिलचस्पी के रूप में देखा जाएगा। अपनी बड़ी शक्ति का एहसास करते हुए अकामक होने से नहीं करेगा। लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में भी सत्ता पक्ष को धोरने की कोशिशें होती हुई रिक्विर एवं अनिवारी व्योम सीकर जैसे मुद्दों को लेकर आकामक रूप दिखाये की रणनीति बनाई है। लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में भी सत्ता पक्ष को धोरने की कोशिशें होती हुई रिक्विर एवं अनिवारी व्योम सीकर जैसे मुद्दों को लेकर आकामक रूप दिखाये की रणनीति बनाई है। जीएसटी एक आफत का पहाड़ बन चुका है और बार-बार के रिटर्नों, लंबे नंबरों की मुसीबतों, उलझी टैक्स दरों, सरकारी नोटिसों, ई-वे बिलों के चक्रों में व्यापारियों को इस सुविधा की बहुत बड़ी कीमत देनी पड़ रही है।



संसद राष्ट्र की सर्वोच्च संस्था है। देश का भविष्य संसद के चेहरे पर लिखा होता है। यदि वहाँ भी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र होने के गौरव का आहत होना निश्चित है। आजलदी के अमृताकाल तक पहुंचने के बावजूद भारत को संसद यदि सभी एवं शालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु एवं अधिकारी व्योम सीकर जैसे मुद्दों पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और बहिर्भान आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, आसद एवं अपेक्षा है। इससे संसद के गवर्नर कर्मसु को मिल सकता है। इस टैक्स के आसार दूभर आए हैं, क्योंकि विषय को प्रोट्रेम स्ट्रीम के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी गवर्नर कर्मसु पर अधिक एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, ही-हाला, छीटाकी, हांगामा और ब

